

नवग्रह टाइम्स

navgrahtimes@gmail.com

facebook.com/Navgrah-Times

@NavgrahTimes

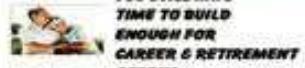
वर्ष: 04

अंक: 73

शनिवार, 24 अगस्त - 2024 (गाजियाबाद)

पेज-8

मूल्य- 3

Deen Mohd.
Mob : 9899896441YOU STILL HAVE
TIME TO BUILD
ENOUGH FOR
CAREER & RETIREMENT
CORPUS.....

- Unlimited Income
- International Convention
(Singapore/Australia
Dubai/Thailand/China)
- Opportunity to Become a Leader
- Team Handling Profile
- Reward And Higher Recognition

Be Your Own Boss
To restart your career
income opportunity

SAL, SHZ, 10, Sundaram Tower, Ansal Building,
100, Raj Nagar, Ghaziabad (U.P.) 201002

साहित्य अकादेमी की महत्तर सदस्यता विनोद कुमार शुक्ल को अर्पित साहित्य का सर्वोच्च पुरस्कार है साहित्य अकादेमी की महत्तर सदस्यता

नवग्रह टाइम्स

नई दिल्ली। साहित्य अकादेमी ने आज अपने संबोधन सम्मान महत्तर सदस्यता से हिंदू के प्रख्यात कथि एवं कथाकार विनोद कुमार शुक्ल को अलंकृत किया। स्वास्थ्य कारणों के चलते यह संश्लिष्ट अलंकरण कालीनक्रम उनके गायपुर स्थित आवास पर किया गया। यह अलंकरण साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष माधव कौशिक और सचिव के श्रीनिवासराव द्वारा प्रदान किया गया। अलंकरण प्राप्त करने के बाद विनोद कुमार शुक्ल ने कहा कि इस सम्मान को मैं नहीं घर आकर देने के लिए ये साहित्य अकादेमी का आभार प्रकट करते हैं। उन्होंने कहीं उम्मीद नहीं की कि इतना बड़ा सम्मान उन्हें

प्राप्त होगा। अभी तक यह सदस्यता जिन महत्वपूर्ण लेखकों को मिली है उनमें बाच अपने को पाकर मैं बहत खुश हूं। इस अवसर पर उन्होंने अपनी दो कविताओं का पाठ भी किया।

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष माधव कौशिक ने कहा कि यह सदस्यता को गौरवान्वित महसूस होने का दूल्ह अवसर है। कवीक शुक्ल जी को सम्मानित करके अकादेमी भी अपने आप को सम्मानित कर रही है। आगे उन्होंने कहा कि शुक्ल जी का लेखन इतना व्यापक और उत्कृष्ट है कि आने वाली पीढ़ियों द्वारा इसका प्रोत्साहित होती रहेंगी। सचिव के श्रीनिवासराव ने उनके सम्मान में प्रशंसित पाठ करते हुए कहा कि विनोद कुमार शुक्ल कविता और महसूस करने का सुख प्राप्त होता है।



सचिव का अद्भुत संयोग रचने वाले सर्वज्ञ हैं। उनकी रचनाएँ किसी स्मृति के आख्यान सी मृदुल और हिलामिल करती हुई होती हैं जिन्हें पढ़कर एक विलब्जन साति की शुक्ल ने कृपि की पहाई के द्वारा

प्रकृति के प्रति ऐसी आनंदिता पाई है जो आगे बढ़कर प्रकृति रक्षा और अंतः मनुष्य की प्रजाति को रक्षा में चित्तित हो जाती है। मनुष्य का जीवन और समाज बेहत छोटी उनकी यही समझता ही उनकी रचनात्मकता का मूल स्वर है और केंद्रीय चित्त भी।

कविता-संछिह्न तत्त्वज्ञ जयलिङ्गम से अपनी रचनात्मक यात्रा शुरू करने वाले विनोद कुमार शुक्ल ने यह आदमी चला गया, नया गरम कोट पहिनकर विचार की तरह, सब कुछ होना चाहा रहेगा, अतिरिक्त नहीं, कविता से लब्बी कविता, आकाश धरती को खटखटाता है, कभी के बाट अभी आदि प्रकाशित कविता-संग्रही और नीकर की कमीज, छिलेगा तो देखें, दीवार में एक खिड़की रहती थी, आदि उपन्यासों से अलंकृत किया जा चुका है।